तपोधन श्री कृष्णदास जाजू

जन्म : २८ अगस्त १८८२ मृत्यु : २३ अक्टूबर १६५५

श्री कृष्ण दासजी जाजू जिन्हें 'तपोधन जाजूजी' के नाम से संबोधित किया जाता रहा है, हमारे समाज की महान विभूति थे, जिनका त्याग एवं सार्वजनिक निष्ठा अतुलनीय थी। राजनीति के विकल्प के रूप में उन्होंनें सारा जीवन खादी, ग्रामोद्योग, भूदान, संपत्तिदान, ट्रस्टीशिप, व्यवहार शुद्धि आदि क्षेत्र में सेवा में उत्सर्ग कर दिया। उनका जीवन चरित्र चिन्तन समाज के संस्कार घड़ने की दृष्टि से स्मरणीय है।

जननी जण तो भकत जण, का दाता का शूर।
नहि तो रहजे बाँझणी, मति गँवाजै नूर।।

अर्थात् राजस्थानी जीवन-दर्शन को आत्मसात् करने वाली जननी ने सचमुच ऐसा लाल जन्मा-नासपड़ा-कृष्णदास जाजू। जीवन के हर क्षेत्र में विजयी रहे-अध्ययन में, वकालत में, सामाजिक क्षेत्र, राष्ट्रीय आन्दोलन में और रचनात्मक जगत् में।

जन्म तो हुआ बीकानेर के समीप एक छोटे से ग्राम अकासर में पर जीवन यात्रा प्रारम्भ की वर्धा जिले के आर्वी ग्राम से। एक मेधावी छात्र के रूप में सफलता प्राप्त करते हुए नागपुर कॉलेज से बी. ए. तथा १६०४ में बी. एल. की पढ़ाई विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान के साथ उत्तीर्ण की। आपकी शैक्षणिक प्रतिभा का सम्मान करते हुए विश्वविद्यालय ने आपको टैगोर स्कालरशिप तथा स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया। आपने वकालत आरम्भ की। आप केवल सच्चे मुकदमें ही लेते थे। वकालत बहुत अच्छी चली।

१६ वर्ष की सफल वकालत को, १६२० में अधिक धन कमाने की लालसा नहीं रखनी चाहिए, ऐसा सोचकर सदैव के लिए तिलांजलि देकर अपने आपको पूर्ण रूप से राष्ट्रीय एवं सामाजिक सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

सन् १६२१ में महासभा के कलकत्ता अधिवेशन के आप अध्यक्ष थे। आपके प्रयासों का यह सुफल था कि तत्कालीन माहेश्वरी समाज दो संगठनों-महत् सभा और महासभा में विभक्त आपसी मतभेदों को भुलाकर 'अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा' के नाम से एकजुट हुआ। बाल-विवाह, पर्दा, ओसर-मोसर भोज, दहेज आदि कुरितियों के विरूद्ध सुधार प्रतिक्रिया स्वयं अपने घर से प्रारम्भ करके आपने एक स्वच्छ उदाहरण रखा। स्वयं अपना विवाह, तत्कालीन बाल-विवाह की सामाजिक प्रथा के विरूद्ध १८ वर्ष की आयु में किया तथा अपने पुत्र-पुत्रीयों का विवाह सादगीपूर्ण, बिना दहेज के लेन-देन के किया। बेटी अनसूया के विवाह में कोई दहेज, गहना नहीं - रामायण और गीता की केवल १-१ पोथी देकर विदा कर दी। यह माहेश्वरी अग्रवाल संबंध था जिससे वह जाति बहिष्कृत हुए।

स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जेल की यात्रा की। सरकारी तंत्र के राजनीति के विकल्प के रूप में खादी, ग्रामोद्योग, भू-दान, सम्पत्तिदान, ट्रस्टीशिप जैसे सिद्धान्तो को जीवन में अपनाया। अवैतनिक रूप से वर्षो तक गांधी जी की सबसे बड़ी खादी संस्थान, चरखा संघ की सेवा करते रहे। गांधी सेवा संघ अध्यक्ष के रूप में किये गये कार्यो पर गांधी जी ने टिपपणी करते हुए कहा था, ''जाजूजी दर्शन शास्त्री नहीं हैं, लेखक भी नहीं हैं, किन्तु व्यवहार दक्ष हैं।'' रचनात्मक कार्यो में उनकी प्रतिभा का सही मूल्यांकन था। विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन में सदैव अग्रणी रहकर संपत्ति दान यज्ञ की गंगा को भागरथी प्रयास करके गांव-गांव और घर-घर पहुंचाने में उनका पुरूषार्थ झलकता है। मध्य प्रदेश यज्ञ मंडल के अध्यक्ष के रूप में भूदान यज्ञ का नियमावली बनाने उनके योगदान की सर्वत्र सराहना हुई थी। नियम इतने पारदर्शी थे कि सरकार को भूदान मंडल के हिसाब किताब जांचने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ी। आचार्य विनोवा भावे के नेतृत्व में सर्व सेवा संघ में उनका काम प्रशन्सनीय था। शिक्षण के प्रेरक जाजूजी के प्रयत्नों का ही फल ही है। 'शिक्षा मंडल' जिसके अन्तगर्त इस समय वर्धा, नागपुर और जबलपुर में कामर्स कॉलेज तथा तथा वर्धा में खादी ग्रामोद्योग विद्याालय चल रहे हैं।

स्वयं सादगी की मूर्ति और अन्यों के लिये दिशा में प्रेरणा सुमन। वस्त्र के नाम पर ३ कुर्ता, ३ धोतीयाँ, ३ टोपियाँ, और १ तौलिया अन्यों के समक्ष आवश्यकताओं की न्यूनता का सादगी का दर्शन रखा। गांधी ग्रामोद्योग की भव्य प्रदर्शनी से अपनी आवश्यकतानुसार मात्र एक कचरा पेटी खरीदना, मानो संग्रह की प्रवृत्ति को त्यागने का आह्वान किया। 'सार्वजनिक पैसे का निजी हित में उपयोग न हो' के सिद्धान्त का पालन करने वाले आपने आर्वी के सूतिका गृह में अपने अग्रज भाई के नाम का पत्थर प्रसिद्धि की लालसा से दूर रहने के विचार से हटा एक उदाहरण रखा। आप घर में रहने पर प्रातः चक्की पर आटा पीसना, अपने कपड़े स्वयं धोना, कूड़ा कचरा झाड़ना, कभी-कभी शौच कूपे को साफ करना, चरखा कातना आदि आपकी दिनचर्या का नियमित अंग था।

पद की लोलुपता से दूर आपने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं एक अन्य अवसर पर स्वतंत्र भारत के वित्तमंत्री के पद का

भार वहन करने का गांधी, नेहरू और पटेल के प्रस्ताव को बहुत नम्रतापूर्वक यह कहकर अस्वीकार कर दिया था, ''बापू मैं अपना स्थान जानता हूँ। वह मेरा स्थान नही है।'' इसी संदर्भ में उन्होने श्री ऋषभदास रांका से कहा : ''राज्य चलाने के लिए बहुत लोगों को खुश करना होता है और इसके लिए असत्य और अन्याय से समझौता करना जरूरी होता है। इसके बिना कार्य नहीं होता। इसलिए मैंने यह जिम्मेदारी नहीं ली। ''इतना उचाँ पद, इतना बड़ा सम्मान, सहज भाव से ठुकरा देना बिरले लोगो की ही विरासत है, जाजू जी उनमें से एक थे।

पद और प्रचार से दूर रहने वाले आप एक साधारण कार्यकर्ता से एकाकार हो गये थे। इसीलिये २३ अक्टूबर १९५५ को जब उनका जयपुर में हार्निया का आपरेशन था और उन्हें डीलक्स कमरे सरकार ने दाखिला किया, उन्होंने कहा : ''आज जब चारों ओर इतनी गरीबी है तोआप लोगों ने मुझे महंगे किराये के कमरे में रखा। न मुझे यह कमरा पसन्द है और न ही डीलक्स नाम। मुझे जनरल वार्ड में ले चलिये।'' जनरल वार्ड के इस आम जनता ने इस जनरल ने २३ अक्टूबर १९५५ को रात में डेढ़ बजे अन्तिम साँस ली। उनकी मृत्यु पर विनोवा जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा '' जाजू जी का स्थान अज्ञात पुरूषों की कोटि में है। हमने उन्हें पहचाना ही नहीं। हमारा यह बहुत बड़ा दुर्भाग्य है।

मृत्युपरान्त भी जिन्हें लोग स्मरण करें, वही श्रेष्ठता की कसौटी पर खरा है। जाजू जी की स्मृति में १९६४ में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा द्वारा गठित 'श्री कृष्णदास जाजू स्मारक ट्रस्ट' उन्हें माहेश्वरी समाज के महान पुरूषों की श्रृंखला में अग्रिम स्थान प्रदान करता है। यही उनका सच्चा स्थान है।